जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन

डॉ. मन्जू जोषी
असि. प्रोफेसर,
स्कूल ऑफ एजुकेषन,
जयपुर नेषनल यूनिवर्सिटी
जयपुर

प्रो. रीटा अरोड़ा
पूर्व संकाय अध्यक्ष
षिक्षा विभाग
राजस्थान यूनिवर्सिटी
जयपुर

शोध सार

प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के 13 खण्डों में से चार उपखण्ड 1 सांगानेर 2 आमेर, 3 बस्सी, 4 चाकसू के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के 900 विद्यार्थियों को न्यादर्ष के रूप में चयनित किया गया है।

प्रस्तुत शोध में वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति को मापने के लिए स्वनिर्मित उपकरण को काम में लिया गया है तथा शैक्षिक उपलब्धिप हेतु कक्षा 12 के वाणिज्य के विद्यार्थियों के वाणिज्य विषय के प्री–बोर्ड के अंक सम्मिलित किये गये हैं। इस शोध के परिणाम दर्षाते हैं कि जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की पाई गई तथा वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

समस्या का औचित्य –

शैक्षिक परिश्रम का अन्तिम उत्पादन उपलब्धि है। षिक्षा में उपलब्धि सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्ध, गुणवत्ता नियंत्रण एवं गुणवत्ता विष्वास के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। षिक्षा के क्षेत्र में सभी शोध कर्ताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है।

आज संसार मे में प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ चुकी है। आज के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवेष में शैक्षिक उपलब्धि बहुत महत्वपूर्ण है। माता–पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा प्रगति के पथ पर ऊपर से ऊपर सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाए।

शैक्षिक उपलब्धि के महत्व से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण प्रष्न एक शैक्षिक शोधकर्ता के समक्ष खड़े होते हैं जैसे एक शैक्षिक उपलब्धि के लिए कौन–कौन से कारकों को महत्व दिया जाये? शैक्षिक उपलब्धि में विभिन्न प्रकार के कारक किस प्रकार योगदान देते हैं।

मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार शैक्षिक उपलब्धि अधिक अच्छी होने में बुद्धिलब्धि तो एक कारक है ही किन्तु अन्य ऐसे कारक भी है जो शैक्षिक उपलब्धि को निम्न एवं उच्च बनाते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि के उच्च होने में, प्रमुख कारकों में विद्यार्थियों का कार्य के प्रति परिश्रम तथा उस विषय के प्रति अभिवृत्ति आदि है। ये कारक ऐसे हैं कि यदि विद्यार्थी की बुद्धिलब्धि औसत है, किन्तु वह मेहनत करता है और विषय के

प्रति उसकी अभिवृत्ति उच्च है, तो उस विद्यार्थी की उपलब्धि उच्च होगी जबकि इसके विपरीत स्थिति में बुद्धिलब्धि उच्च होने पर भी शैक्षिक उपलब्धि निम्न हो सकती है।

विद्यार्थियों की अभिवृत्तियाँ, वाणिज्य विषय के प्रति पसन्दगी, उपयोगिता, अध्यापक के प्रति दृष्टिकोण आदि प्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

अतः शोधकर्त्री ने इस विषय को अपने शोध के लिए इसलिये चुना है कि वाणिज्य विषय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि से किस प्रकार अन्तः संबंधित है।

वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति के संबंध में मान्यतायें –

- अध्यापकों का व्यवहार विद्यार्थियों के व्यवहार से प्रभावित होता है।
- वाणिज्य विषय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति कक्षा की सामान्य दषा को प्रभावित करती है क्योंकि यह विद्यार्थियों के व्यवहार को इंगित करने के लिए एक उद्दीपन का काम करती है।

शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में मान्यतायें –

- शोध कार्य का इस मान्यता को लेकर चला है है कि वाणिज्य की शैक्षिक उपलब्धि एक प्रकार का व्यवहार है जो कि विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवध्यकताओं के द्वारा निर्धारित रहता है।

समस्या अभिकथन –

प्रस्तावित शोध का शीर्षक निम्न प्रकार है– "जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों का वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन"

शोध के उद्देष्य–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न उद्देष्य हैं–

- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ –

प्रस्तावित शोध के लिए निम्न प्राकल्पनाओं की रचना की गई है।

- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की पाई जाती है।

- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

शोध के प्रयुक्त पद –

वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति –

वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति किषोर विद्यार्थियों के वाणिज्य विषय के अधिगम अनुभवों द्वारा व्यवस्थित वह संवेगात्मक प्रवृत्ति है जो कि सकारात्मक या नकारात्मक रूप से वाणिज्य विषय की प्रतिक्रिया को व्यक्त करती है। वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति वाणिज्य विषय क प्रति संगति रूप प्रति उत्तर देने वाली स्वाभाविक तत्परता है जिसे सीखा जाता है, तथा वह किसी विषय विषेष का उत्तर देने की लाक्षणिक रीति बन जाती है।

शैक्षिक उपलब्धि –

आधुनिक युग में जहाँ व्यक्ति के दिन प्रतिदिन के जीवन में वैयक्तिक भिन्नताएँ दृष्टिगोचर हो रही है, वहाँ समाज, विद्यार्थी, षिक्षा शास्त्री एवं अध्यापक उपलब्धि को विषेष महत्व देते हैं। विद्यार्थियों, अध्यापकों, षिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम या षिक्षा के किसी भी पहलू का मापन केवल शैक्षिक उपलब्धि द्वारा ही सम्भव होता है। आज विष्व में विभिन्न स्तरों, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों, कॉलेज एवं विष्वविद्यालयों आदि पर विभिन्न प्रकार के उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग किया जा रहा है। इनके अभाव में शैक्षिक विकास की प्रक्रिया पूर्णतः असम्भव है।

उपलब्धि में व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा वह कार्य सम्मिलित किया जाता है।

– सुपर

न्यादर्ष –

प्रस्तुत शोध में 60 विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। ये सभी विद्यालय हिन्दी माध्यम के हैं, जिसमें राजस्थान माध्यमिक षिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम चलता है। सम्पूर्ण न्यादर्ष में 900 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

चर –

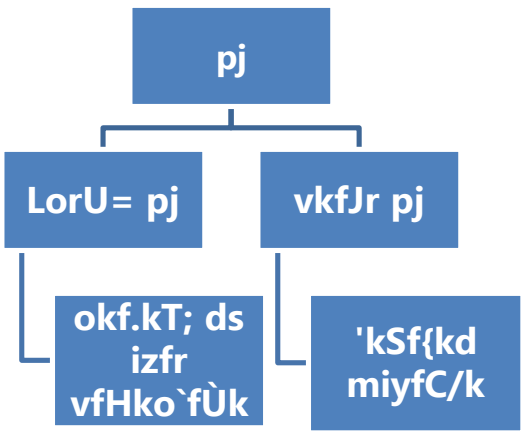

उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

- वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति मापनी (स्वनिर्मित)
- शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा 12 के वाणिज्य के विद्यार्थियों के वाणिज्य विषय के प्री–बोर्ड के अंक।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया–

- मध्यमान
- मानक विचलन
- सहसम्बन्ध

अध्ययन के निष्कर्ष–

तालिका – 1

जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति

वर्ग अन्तराल	बारम्बारता	प्रतिशत	स्तर
10–50	02	0.11	अतिनिम्न
50–100	63	7.00	निम्न
100–150	689	76.56	औसत
150–200	146	16.22	उच्च
200–250	00	00.00	अति उच्च
	छत्र 900	100 :	

तालिका 1 में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति का वर्ग अन्तराल, बारम्बारता, प्रतिषत एवं स्तर को दर्षाया गया है।

तालिका 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि 10 से 50 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले 2 विद्यार्थी अर्थात 0.22 प्रतिषत ने वाणिज्य विषय के प्रति अति निम्न अभिवृत्ति को दर्षाया गया है।

50 से 100 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले 63 विद्यार्थी अर्थात 7 प्रतिषत ने वाणिज्य विषय के प्रति निम्न अभिवृत्ति को दर्षाया है। 100 से 150 के मध्य 689 विद्यार्थियों ने अर्थात् 76.56 प्रतिषत ने वाणिज्य विषय के प्रति औसत स्तर की अभिवृत्ति का परिचय दिया है।

150 से 200 के मध्य 146 विद्यार्थियों के मध्य 146 विद्यार्थियों अर्थात् 16.22 प्रतिषत ने वाणिज्य विषय के प्रति उच्च स्तर की अभिवृत्ति का परिचय दिया है।

200 से 250 के मध्य विद्यार्थियों की प्रविष्टि नगण्य पाई गई जो कि यह परिलक्षित करता है कि किसी भीा विद्यार्थी में अति उच्च स्तर की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति नहीं है।

अतःअध्ययन की परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्तिा औसत स्तर की पाई जाती है, स्वीकृत होती है। चूँकि 76.56 प्रतिषत विद्यार्थियों ने औसत स्तर की अभिवृत्ति को परिलक्षित किया है।

तालिका – 2

जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि

	संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध
अभिवृत्ति	900	291	
शैक्षिक उपलबिध	900	269	0.03

तालिका 2 में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की उपलब्धि को दर्षाया गया है। तालिका 2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि अभिवृत्ति एवं उपलब्धि में 0.03 सह–सम्बन्ध पाया गया। 0.03 अत्यन्त निम्न धानात्मक सहसम्बन्ध है, जो कि .00 से +.20 के बीच पाया जाता है। अतः यह नहीं कहा जा ासकता है कि जिन विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति अधिक हो उनकी उपलब्धि भी अधिक हो। अतः अध्ययन की सकारात्मकता परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है, निरस्त की जाती है।

तिवाड़ी (1982) एवं **सेनमूगसुन्दरम** (1983) ने पाया कि अध्ययन आदतें एवं अभिवृत्ति, उपलब्धि से धनात्मक रूप से सहसम्बन्धित है।

परिसीमायें –

- प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले के 13 उपखण्डों में से केवल चार उपखण्डों आमेर, सांगानेर, चाकसू और बस्सी को लिया गया है।
- शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में से वाणिज्य विषय के प्रति अभिवृत्ति को शामिल किया गया है।

शैक्षिक निहतार्थ –

- विद्यार्थियों की असफलता के अतिरिक्त विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह ऐसा भी होता है जिनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न होती है जो केवल उत्तीर्ण होने वालों की सीमा के निकट होते हैं। वे विद्यार्थी मानसिक रूप से उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए सक्षम होते हैं लेकिन किन्हीं कारणों से अपनी योग्याताओं एवं क्षमताओं का विकास नहीं कर पाते। प्रस्तुत शोध अध्यापकों को यह अवबोधन करने में मदद कर सकेगा कि शैक्षिक उपलब्धि अभिवृत्ति के अलावा, संज्ञानात्मक कारक, आकांक्षास्तर, अध्ययन आदतें व रूचि से भी प्रभावित होती है।

भावी शोध हेतु सुझाव –

- शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अन्य चरों को लेते हुए राज्य वार विभिन्न बोर्डों के संबंध में अध्ययन किया जा सकता है।
- अध्यापक प्रभावषीलता, वचनबद्धता एवं अध्यापक की भूमिका के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
- वाणिज्य विषय के प्रति विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता, समस्या समाधान विधि, निर्णय लेने की क्षमता एवं अन्य जीवनकौषलों के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
- न्यादर्ष को अधिक व्यापक किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, एन.पी. 2009. एडवांस बिजनेस स्टेटिक्स, रमेष बुक डिपो, जयपुर, पेज. न. 5, द्वितीय 3.14
- बेस्ट, जे.डब्ल्यू. 2008. रिसर्च इन एजुकेषन, प्रिंटेस हॉल ऑफ इण्डिया लि., नई दिल्ली, पेज. 17–18, 482
- बुच, एम. बी.(एजुकेषन), 1991, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेषन, वॉल. – 1.1, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., पेज. – 6–10
- गिल्फर्ड, जे.पी. 1956, फण्डामेंटल स्टेटिस्टिक्स इन साइकॉलोजी एण्ड एजुकेषन,मैक ग्रॉ हिल बुक्स कम्पनी, न्यूयोर्क।